13-5-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

तुम बच्चों को सर्विस है न्यारी। वहाँ तो साधु सन्त आद उनके कितना ठाठ बाठ आद होता है। यहाँ तो बिलकुल ही साधारण है। कोई तिलक आद लगाने की दरकार नहीं है। तिलक नामी ग्रामी है। वो है राजतिलक, सौभाग्य का तिलक। यहाँ कोई सौभाग्य का तिलक नहीं है। बाप आकर सौभाग्य का तिलक देने पुरुषार्थ कराते हैं। उनका दुर्भाग्य का तिलक है। बाप को हेवनली गाड फादर कहा जाता है अर्थात स्वर्ग रचने वाला। वो सबका फादर है। ऐसे नहीं कि सब फादर्स हैं। सब आत्माओं का फादर एक है। वो ही पुरानी दुनियाँ को बदल कर नई दुनियाँ बनाते हैं। जब तक नई दुनियाँ की स्थापना नहीं हो तब तक विनाश भी हो नहीं सकता। पहले स्थापना फिर विनाश फिर पालना होती है। बच्चे जानते हैं गुप्त-गुप्त स्थापना हो रही है। राजधानी स्थापन हो रही है। यह है रूहानी योगबल। योगबल बाहुबल पर विजय पहनता है। सर्वशक्तिवान एक बाप को ही कहा जाता है। उनसे ही शक्ति मिलती है। तुम पवित्र बन जाते हो। बच्चों को जब कि निश्चय है तो पुरुषार्थ भी अच्छी रीती करना है। सामना करना होता है। युद्ध का मैदान है ना। पाँच विकारों अर्थात रावण पर जीत पानी है। बच्चे जानते हैं कि घर में भी झगड़ा होता है। कुमार है तो बाप कहेगा शादी जरूर करनी है। अत्याचार होगा तो नूँधा हुआ है। कौरव हारे पाण्डव जीते। गायन है ना। तुम बच्चों को जीत पहनाने वाले हमेंथ है इसीलिये याद करते हो। तुम सतोप्रधान थे तो तुम राज्य करते थे। अब वो शक्ति नहीं रही है। अब बाप से श.. मिलती है याद से। तुम तो प्रैक्टीकल में सुन रहे हो। वो शास्त्र आद सुनते हैं पुरुषार्थ कुछ भी नहीं करते हैं। और पुरुषार्थ कर रहे हो। यहाँ बाप प्रैक्टीकल में आया हुआ है। मनुष्य सिर्फ शास्त्रों की बातें सुनते रहते हैं। तुमको तो 5000 वर्ष पहले मुआफिक बाप समझा रहे हैं। तुम हकदार हो वर्सा पाने के। ड्रामा में नूँध ही अन्तर्यामियों की है। ओर [illegible] आते ही [illegible] अल्ला मी. बेगरी, आ.. ने सारे विश्व पर राजधानी नहीं की है। यहाँ तो तुम बच्चों को सारे विश्व की बादशाही है। तुम जानते हो कि हम ऐसे थे। ऐसे-ऐसे राज्य गँवाया। फिर अब पुरुषार्थ कर रहे हो। अब तुम बच्चों को मालूम पड़ गया है कि तुम किस बाप को भूले हो। बाप को कोई जाने तो उनकी प्रापर्टी को भी जाने। सतयुग में यह बाप और रचना की आद मध्य अन्त को नहीं जानते हैं। यहाँ स्मरण करते हो कि बाबा आओ। वहाँ पर यह स्मरण नहीं करते हैं। तुम बच्चे यहाँ सुनते भी हो तो याद भी करते हो। जानते हो परमधाम से आकर हमको पढ़ाते हैं। यह भी जानते हो कि हेवनली गाड फादर हेवन ही स्थापन करते हैं ओर भी हैं हेवन स्थापन करेंगे। बोलो भारत स्वर्ग था। सृष्टी का चक्र तो फिरता ही है ना। पावन सृष्टी फिर पतित होगी। यह खेल है। गाया जाता है कि ड्रामा की आद मध्य अन्त को कोई नहीं जानते हैं। तुम बच्चे जान गये हो। औरों को भी ज्ञान देते रहते हो। बाप की याद दिलाते रहते हो। वो बाप टीचर गुरू भी है। ज्ञान का सागर है। सृष्टी की आद मध्य अन्त का ज्ञान उनमें है। मनुष्य यह नहीं जानते हैं। जानीजाननहार का अर्थ भी समझाया है। ऐसे नहीं कि कौन क्या करते हैं तो वो भी बाबा जानते हैं। बाबा को वो जाने तो क्या दरकार है। तुम सुनेंगे तो तुम फायदा पायेंगे। ना सुना तो अनुकसान अपना ही करेंगे। पाप कर्म करते हैं तो नुकसान अपना ही करते हैं। भुलाने से पाप हल्का हो जायगा। सर्जन से तन्दुरुस्ती नहीं करनी है। यह है अविनाशी सर्जन, अविनाशी आत्मा का। विनाशी शरीर का सर्जन नहीं है। यह है रूहानी बाप। कहते हैं कि मुझे याद करो। ऐसे और कोई साधु सन्त महात्मा कह नहीं सकते हैं। वो तो जानते ही नहीं है। यह ज्ञान कोई में भी नहीं है। मनुष्य अविनाशी रचता से डरते हैं कि कहीं भूल चूक नहीं हो जावे। बाप आकर धर्मराज द्वारा हमको देंगे। अगर ऐसा काम करते हैं तो। बाप ने समझाया है कि अब यह रावण राज्य है, फन्द होता है। र तो सजा आद का नाम भी नहीं है। फिर कटेग की बातें नहीं। यहाँ तो बहुत कर्म करते हैं